ISSN – 2277-7911
Impact Factor – 5.077
YOUNG RESEARCHER
A Multidisciplinary Peer-Reviewed Refereed Research Journal
Oct-Nov -Dec 2022
Vol. 11 No. 4

शहरी शिक्षित समाज के निर्माण में महिलाओं का योगदान

डॉ. बंदना श्रीवास्तव

मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार

Corresponding Author: डॉ. बंदना श्रीवास्तव

DOI - 10.5281/zenodo.14523319

परिचय:

शिक्षा किसी भी समाज या व्यक्ति या महिला के उत्थान का उत्कृष्ट माध्यम है। यह वह प्रकाश है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति मनुष्य के जीवन से अंधकार को भगाकर उजाना से भरा जा सकता है। खासकर महिलाओं के लिये शिक्षा एक वरदान से कम नहीं है जिसके माध्यम से वह अपने अधीकार एवं कर्तव्यों को जान पाती हैं। शिक्षा को अनिवार्य रुप से स्त्री से जोड़ा जाना चाहीये। इसका एक रुप में जोड़ने वाली अवधारणा है। इसका एक रुप शिक्षा में स्त्रियों को पूरुषों की तरह शमिल करने से सम्बन्धित है। दूसरे रुप में यह स्त्रियों के लिये बनाई गई विशेष शिक्षा पद्धति को सन्दर्भित करता है।

वास्तव में सिखाने की क्रिया को शिक्षा कहते है। शिक्षा के जरिये मनुष्य के ज्ञान एवं कला कौशल में दृटि करके उसके अनुवांशिक गुणों को निखारा जा सकता है और उसके व्यवहार की अर्जित किया जा सकता है। शिक्षा व्यक्ति की बुद्धि, बल और विवेक को उत्कृष्ट बनाती है वहीं एक अशिक्षित व्यक्ति जानवर के समान है। प्राचीन काल मे स्त्रियों को केवल हर और विवाहित जीवन गुजारने की सलाह दी जाती थी परन्तु समान के विकास के साथ-साथ नारी शिक्षा को भी अलग आकर और पद प्राप्त हुआ है। पूरुष प्रधान समाज से ही स्त्री अपने काम का लोहा मनवा रही है। कहते हैं कि एक अशिक्षित नारी गृहस्मी की भी दखभाल अच्छे से नही कर सकती है।

एक कहावत है कि एक पूरुष को शिक्षित कर के हम सिर्फ एक हीं व्यक्ति को शिक्षित कर सकते है लेकीन एक नारी को शिक्षित करके हम देश को शिक्षित कर सकते हैं। किसी देश और समान की तो छाडिये हम अपने परिवार के उन्नति की कामना भी स्त्री शिक्षा के बिना नहीं कर सकते। किसी भी लोकतंत्र की यह नीवं है कि स्त्री और पूरुष को बराबर शिक्षा प्राप्त करने का हक हो। एक पढ़ी लिखी स्त्री हीं समाज में सुख और शांति ला सकती हैं और एक नारी हीं मॉ के रुप में उसके पहले शिक्षा का स्त्रोत है। इसी कारणवस एक स्त्री का शिक्षित होना बहुत जरुरी है। एक शिक्षित नारी ना केवल अपने गृह का बलकि पूरे समाज को सही दिशा प्रदान करती है। हर एक स्त्री को अपनी इच्छानुसार शिक्षा ग्रहण करने का हम है उस क्षेत्र में कार्य कर सकें जिनमें वह कुशल हैं। स्त्री शिक्षा का महत्व विभिन्न तरीके से समाज के काम आता है।

महिला शिक्षा के लिये भारतीय योजना:

अतः इस प्रकार स्त्रीयों को समाज में शिक्षा के निर्माण के दृष्टिकोण से सरकार ने अन्य कानुन का भी प्रावधान रखा है जो निम्न है:-

१. दहेज प्रतिबंध अधिनियम 1961
२. सती निषेध अधिनियम 1987
३. राष्ट्रीय महिला आयोग अधिनियम
४. 1990 गर्भधारण पूर्व लिंग चयन
५. कुटूम्ब न्यायालय अधिनियम 1984
६. महिलाओं का अशिष्ट रुपण अधिनियम 1986

शहरी शिक्षित समाज के निर्माण में महिलाओं की भुमिका:

नारी की भुमिका शिक्षित समाज के निर्माण में अनमोल है। यह एक विडम्बना ही ळै कि भारतीय समान में नारी की स्थिती अत्यत विरोधा भासी रही है। एक तरफ तो उसे शक्ति के रुप में प्रतिस्ढ़ित किया गया है। तो दूसरी ओर बेचारी अबला भी कहा जाता है इन दोनों अतिवादी धारणाओं ने नारी के स्वतंत्र विकास में बाधा पहूचायी है।

इस प्रकार एक गहरी शिक्षित समाज के निर्माण में इनकी भुमिका अविस्मरणीय रही है जो की निम्न लिखीत है:-

१. मॉ के रुप में योगदान
२. पत्नी के रुप में योगदान
३. गृहणी के रुप में योगदान
४. सांस्कृतिक, संस्कार और परम्पराओं की सरिक्षिका के रुप में
५. सामाजिक शैक्षिक धार्मिक योगदान
६. स्वतंत्रता आन्दोलन में योगदान
७. राजनीती में
८. सामाजिक संस्याओं में
९. पत्रकारिता में
१०. शिक्षा के क्षेत्र में
११. चिकित्सा के क्षेत्र में
१२. सूचना प्रौधोगिकी के क्षेत्र में
१३. व्यवसाय के क्षेत्र में
१४. खेल कूद के क्षेत्र में
१५. वैज्ञानिकता के क्षेत्र में
१६. धार्मिक क्षेत्र में
१७. इजिनियरींग के क्षेत्र में
१८. पायलट बनना।
१९. अंतरिक्ष में सेवा

इस प्रकार उपरोक्त सभी क्षेत्र में नारी का अपूरणीय योगदान है।

भारतीय समाज में नारी की महत्वपूर्ण भुमिका:

नारी का सम्मान करना एवं उसके हितों की रक्षा करना हमारे देश की सदियों पूरानी संस्कृति है। यह एक विडम्बना ही है। कि भारतीय समाज में नारी की स्थिती अत्यंत विरोधाभासी रही है। एक तरफ वो उसे शक्ति के रुप में प्रतिस्ढित किया गया है। तो दूसरी ओर बेचारी अबला भी कहा जाता है। इन दोनों हीं अतिवादी धारणाओं ने नारी के स्वतंत्र विकास में बाधा पहूचाई है।

चिन्तनात्मक विकासः

सदियों से ही भारतीय समाज में नारी की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उसी के बल बुते पर भारतीय समाज खड़ा है। नारी ने भिन्न-भिन्न रुपों में अत्यधिक भूमिका निभाई है। चाहे वह सीता हो झांसी की रानी, इन्दिरा गांधी हो, सरोजनी नायंडू हो।

इस प्रकार समाज एवं देश के विकास में निम्न महिलाओं का भी महत्वपूर्ण योगदार है:

I. मधू किस्वर
II. सुधी सुधी तिवारी
III. श्रीमती किरणमयी
IV. श्रीमती सुस्तिता दता
V. राणी लक्ष्मी बाई
VI. एनी बेसेंट
VII. मदर टेरेसा
VIII. लता मंगेशकर
IX. कल्पना चावला
X. पी.वी. सिंधु, आदि।

निष्कर्षः

अतः इस प्रकार उपर्यूक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है की- महिलयों हर क्षेत्र में आगे आ रही हैं महिलायें आज मिडिया, पत्रकारिता एवं जनसंचार के क्षेत्र में भी महिलाओं का वर्चस्व कायम है। सेना वायुयान उड़ान शिक्षा विज्ञान, खेलकुद, व्यवसाय सूचान प्रोधौगिकी,चिकित्सा इत्यादी सभी क्षेत्रों में वे समाज का स्वर्णिम निर्माण कर रहीं हैं। खेती में पूरुषों से ज्यादा कार्य करती है महिलायें ग्रामीण क्षेत्र से लेकर शहरी क्षेत्र तक महिलाओं ने समाज एवं राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

अतः वर्तमान में इनको और ज्यादा जागरुक एवं शिक्षित किये जाने की नितान्त आवश्यकता है।

संदर्भ सूचीः

१. डा. सिंह राजबाला-मानवाधिकार एवं महिलायें पब्लिकेशन-अविस्कार पब्लिकेशन जयपूर
२. डॉ. राजकुमार-भारतीय नारी पब्लिकेशन अर्जुन पब्लिसिंग हाउस नई दिल्ली
३. जैन मंजु-कार्यशील महिलायें एवं सामाजिक परिवर्तन प्रकाशन-प्रिनृवैल रुपा बुक्स प्रा. लिमिटेड तिलक नगर जयपूर
४. इन्टरनेट संचार माध्यम
५. स्वयं के विचार।